Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

महाकवि बाणभट्ट के कृतित्त्वों की समीक्षा

दीनानाथ मिश्र
शोधछात्र - स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
जिला – दरभंगा (बिहार), भारत।

सारांश – बाणभट्ट के दो गद्यकाव्य हर्षचरित और कादम्बरी ख्यातिलब्ध ही है, इनके अतिरिक्त चण्डीशतक, पार्वतीपरिणय और मुकुटताडितक भी इनहीं की रचना है। उन्होंने अपने कतियों में वर्णित भावानुसार रस का परिपाक दर्शाया है। बाणभट्ट गद्यकाव्य–सम्राट है। उनका वाणी पर असाधारण अधिकार था जिसमे प्रभावित होकार हर्षवर्धन ने उन्हें वश्यवाणी–कविचक्रवर्ति की उपाधि से विभूषित किया। यद्यपि बाणभट्ट के नाम से अन्य रचनायें भी मिलती हैं। बाण गद्य के साथ–साथ पद्य और नाट्य रचना में सिद्धहस्त है।

प्रमुख शब्द - गद्य, पद्य, नाट्य, बाणभट्ट, गीतिकाव्य, शैली, भाषा, उपनिबद्ध, ओजपूर्ण, भावाभिव्यक्ति, दाय, अप्रतिहत, पिपासा, कविचक्रवर्ती।

बाणभट्ट सरस्वती के वरद् पुत्र थे। इनका गद्य–काव्य 'कादम्बरी' अपने विषय में अद्वितीय माना जाता है। प्राचीन काल में ही समालोचकों की दृष्टि बाणभट्ट की मधुर कविता पर पड़ी थी। गोवर्धनाचार्य बाणभट्ट को वाणी का साक्षात् अवतार मानते थे। बाणभट्ट के काव्य में चरित्र–चित्रण की अद्भुत कला है। बाण के दो गद्यकाव्य –हर्षचरित और कादम्बरी। इनके अतिरिक्त बाण की अन्य कृतियाँ ये हैं–'चण्डीशतक' 'पार्वती परिणय' और 'मुकुटताडितक'।

चण्डीशतक यह गीतिकाव्य है। इसमें स्रग्धरा वृत्त के सौ श्लोक हैं। इसके बाणरचित होने में सन्देह की कोई बात नहीं, भले ही कुछ विद्वान् सन्देह की दृष्टि से देखें। हम देखते हैं कि कादम्बरी में बाण ने चण्डिकायतन का अनूठा चित्रण कर रखा है भोज ने अपने सरस्वती कण्ठाभरण में, मम्मट ने अपने काव्यप्रकाश में और अर्जुन वर्मदेव ने अपनी अमरुशतक की टीका में चण्डीशतक के कितने ही श्लोक उद्धृत कर रखे हैं। अर्जुनवर्मदेव ने स्पष्ट ही लिख दिया है कि वे बाणकृत हैं–

'उपनिबद्धं च भट्टबाणेनैवंविध एव संग्रामप्रस्तावे देव्यास्तलिभिर्भगवता भर्गेण सह प्रीतिप्रतिपादनाय बहुधा नर्म यथा दृष्टावासक्तदृष्टि': इत्यादि।

'चण्डीशतक' का कथानक मार्कण्डेय पुराण के देवीमाहात्म्य पर आधारित है। यह भगवती चण्डी दुर्गापार्वती का चरित्र एवं स्तुतिपरक है। इसमें भगवती का किस तरह महिषासुर के साथ युद्ध हुआ और किस तरह उसने इस राक्षसराज का अन्त किया इसका ओजपूर्ण भाषा में वर्णन किया गया है। उदाहरणार्थ हम सोलहवाँ श्लोक उद्धृत करते हैं जिसमें बाण की प्रौढ़ शैली की स्पष्ट छाप परिलक्षित हो जाती है–

पादोत्क्षेपाद् व्रजर्नखकिरणशतैर्भूषितश्चन्द्रगौरै-

र्दूधागे चापताश्चरणतलगतैरंशुभिः शोणशोभः।

संन्यस्तालीनरत्नप्रविरचितकरैश्चार्चितः क्षिप्तकायै-

र्यस्या देवैः प्रणीतो हविरिव महिषः साऽवतादम्बिका वः।।[1]

बाण द्वारा 'चण्डीशतक' की रचना के पीछे संस्कृत जगत् में यह किंवदन्ती चली हुई है कि मयूर को सूर्यशतक द्वारा रोग–मुक्त देखक बाण को उससे खार–सी हो गई थी। इसीलिए उसने भी अपने हाथ काट लिये और चण्डीशतक' द्वारा भगवती को प्रसन्न करके उसके प्रसाद स्वरूप हाथ फिर प्राप्त कर लिये थे।

पार्वती-परिणय : – यह एक नाटक है। इसकी बाण–कृति होने के सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद है। कीथ एवं उसके जैसे विचार रखने वाले आलोचकों का कहना है कि यह नाटक कादम्बरीकार बाण का नहीं प्रत्युत् पन्द्रहवीं शती ई के किसी वामनभट्ट बाण का बनाया हुआ है। उनका तर्क यह है कि इसमें कादम्बरी के प्रणेता बाण की जैसी कला की उत्कृष्टता और परिपक्वता देखने में नहीं आती है। क्या भाव–व्यंजना और क्या शैली सबमें शैथिल्य है। यह कालिदास के कुमारसंभव का अनुकरण मात्र है। विचार और भाव यहाँ तक कि शब्द–प्रयोगों तक का भी दोनों में साम्य है। हम मानते हैं कि इसमें ये त्रुटियाँ हैं, किन्तु यह बाण का प्रारंभिक कवि–कर्म है, इसलिए कुछ त्रुटियों का रहना स्वाभाविक ही है। बाण ही क्या सभी कवियों की प्रारंभिक रचनायें कुछ कला की दृष्टि से, कुछ भाषा की दृष्टि से और कुछ भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से शिथिल–सी, उखड़ी–पुखड़ी सी रहा ही करती है। स्वयं कालिदास का ऋतुसंहार और मालविकाग्निमित्र तथा बाण का ही हर्षचरित क्या कला की दृष्टि से परिपक्व अथवा परिष्कृत कोटि में आते हैं? कितने ही विद्वान् ऋतु–संहार को कालिदास की कृति मानने में सकुचाते रहते हैं, किन्तु वह कालिदास की ही कृति मानी गई है। फिर पार्वती–परिणय पर ही बाण की कृति होने का सन्देह क्यों किया जाता है? पार्वती–परिणय की प्रस्तावना में ही हमें प्रमाण मिल जाता है कि यह बाणरचित है जैसे

अस्ति कविसार्वभौमो वत्सान्वयजलधिसम्भवो बाणः।

नृत्यति यद्रसनायां वेधोमुखलासिका वाणी।।[2]

वत्सकुलोत्पन्न बाण को थोड़े से नाम–साम्य से वामनभट्ट बाण मान लेने में हमें औचित्य नहीं दिखाई देता है।

पार्वती–परिणय में महादेव–पार्वती के विवाह का कथानक है। यह कालिदास के कुमारसम्भव पर आधृत है। कालिदास की बाण ने हर्षचरित के एक प्रारंभिक श्लोक में बड़ी प्रशंसा कर रखी है। नया–नया कवि होने से वह काव्य क्षेत्र में अपने लिए मार्ग बना रहा था। इसलिए उसने कालिदास से प्रेरणा ली है। बहुत से भाव और शब्द प्रयोग तक अपनाये है। स्वयं कालिदास ने भी तो अपनी कृतियों में महाभारत के शब्दप्रयोग अपना रखे हैं न सिर्फ पार्वती–परिणय का कुमारसम्भव से अपितु, बाण की अन्य कृतियों–हर्षचरित और कादम्बरी से भी बहुत स्थलों में भाव साम्य मिलता है। स्थानाभाव के कारण हम इसके विस्तार में भी नहीं जाना चाहते, किन्तु तुलनार्थ एक उदाहरण प्रस्तुत है–

पार्वती-परिणय प्रथम अंक

हिमवान्–

'देवि कन्या -पितृत्वं खलु गृहमेधिनामधिकतरं दुःखमावहति। ...

कुचयुगं परिणद्धं यथा यथा वृद्धिमेति तन्वी,

वरचिन्ताहृतमनसस्तथा तथा कार्यमेति मे गात्रम्।[3]

हर्षचरित चतुर्थ उच्छवास-

'देव.... हृदयमन्धकारयति मे दिवसमिव पयोधरोन्नतिरस्याः। .....सेयं सर्वाभिभाविनी शोकाग्नेर्दाहशक्तिर्यदपत्यत्वे समानेऽपि जातायां दुहितरि दूयन्ते सन्तः।[4]

मुकुटताडितक- मुकुटताडितक भी एक नाटक है। इसके बाणरचित होने का प्रमाण हमारे पास यह है कि त्रिविक्रम भट्ट के 'नल-चम्पू' काव्य के टीकाकार चन्द्रपाल और गुणविजयगणि ने अपनी टीकाओं में 'मुकुटताडितक' का यह उद्धरण दे रखा है-

यदाह मुकुटताडितके बाण :-

आशाः प्रोषितदिग्गजा इव गुहाः प्रध्वस्तसिंहा इव

द्रोण्यः कृत्तमहाद्रुमा इव भुवः प्रोत्खात-शैला इव।

बिभ्राणाः क्षयकाल-रिक्तसकल-त्रैलोक्यकष्टां दशां

जाताः क्षीणमहारथाः कुरुपतेर्देवस्य शून्याः सभाः।।[5]

भोज ने भी अपने 'शृंगार-प्रकाश' में बाण के नाम से इस नाटक के उद्धरण दे रखे हैं। इससे अधिक इसके सम्बन्ध में कुछ पता नहीं चलता है। यह अलभ्य है। इसका कथानक महाभारत से लिया हुआ है जिसमें भीमसेन अपने तीव्र गदा-प्रहार से दुर्योधन का काम तमाम कर देता है और उसके मुकुट को पैरों द्वारा ताड़ित करके कुचल डालता है।

पद्य-कादम्बरी : बाण के काल-निर्धारण के संदर्भ में हमने भोज का यह उद्धरण दे रखा है-यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्य-बन्धे न तादृशः' अर्थात् बाण का कवि-कर्म जिस तरह गद्य में उभरा है वैसे पद्य में नहीं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि बाण का लिखा हुआ कोई पद्य-काव्य भी रहा होगा जो अब विलुप्त है। 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' में यत्र-तत्र आए हुए कुछ विकीर्ण श्लोकों के आधार पर तो भोज अपना विचार नहीं बना सकते। हाँ, इसके लिए 'पार्वती-परिणय', एवं 'चण्डीशतक' के श्लोक अवश्य लिये जा सकते हैं। किन्तु क्षेमेन्द्र (1100 ई॰) ने अपनी 'औचित्यविचारचर्चा' में बाण के विप्रलम्भशृंगार के सम्बन्ध में यह लिख रखा है-

"यथा वा भट्टबाणस्य-

हारो जलार्द्रवसनं नलिनीदलानि, प्रालेयशीकरमुचस्तुहिनांशुभासः।

यस्येन्धनानि सरसानि च चन्दनानि निर्वाणमेष्यति कथं स मनोभवाग्निः।। [6]

अत्र विप्रलम्भरसलग्नधैर्यायाः कादम्बर्या विरहव्यथा वर्णना इत्यादि।

इससे सिद्ध होता है कि बाण ने कोई 'पद्य-कादम्बरी' भी लिखी हो और उसी को लक्ष्य करके भोज ने अपना विचार बनाया हो। किन्तु यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि बाण ने यदि पद्य कादम्बरी भी बनाई, तो कब बनाई? गद्य कादम्बरी के पश्चात् या पूर्व? पश्चात् तो बना नहीं सकते थे, गद्यकादम्बरी अधूरी ही छोड़कर वे चल बसे थे। पूर्व बनाने में यह प्रश्न खड़ा हो जाता है कि जब एक विषय पर कलाकार अपना चमत्कार दिखा चुका है तो फिर उसी घिसे-पिटे विषय पर लिखने में उसकी रुचि कैसे उत्पन्न हो गई? हो सकता है कि पद्यकादम्बरी बाद के किसी अन्य कवि ने लिखी हो और उसका कर्तृव्य भी बाण को दे दिया गया हो। वास्तव में जब तक यह ग्रन्थ हमें उपलब्ध नहीं हो जाता, तब तक इसके सम्बन्ध में हम निश्चयात्मक कुछ भी नहीं कह सकते हैं कि यह बाण की कृति है।

बाण एक धनी और विद्या सम्पन्न ब्राह्मण परिवार के थे। उनका व्यक्तित्व बहुत कुछ कालिदास के व्यक्तित्व से मिलता जुलता है। जिन पर सरस्वती और लक्ष्मी दोनों प्रसन्न रहती थी। दोनों शैव थे, किन्तु कट्टर सम्प्रदायवादी नहीं। दोनों का रहन-सहन, ठाटबाट रईसी अथवा सामन्तवादी था। दोनों छैले-छबीले जीवन वाले थे। दोनों को राजाश्रय प्राप्त था। दोनों घुमक्कड़ प्रकृति के थे

और अपने पर्यटनों में जगत् के सारे चराचर जीवन का, जीवन के सारे विविध पहलुओं का बड़ी बारीकी के साथ प्रत्यक्ष अनुभव और अध्ययन करने के बाद साहित्य-साधना में जुटे थे। एक पद्य-नाट्य क्षेत्र का सम्राट् बना, तो दूसरा गद्य क्षेत्र का सम्राट्। दोनों अपनी-अपनी कला-कृतियों से हमेशा के लिए अमर हो गए।

बाण में विलक्षण प्रतिभा थी, जो उन्हें पैतृक दाय के रूप में प्राप्त हुई थी, क्योंकि उनके कुल के सभी लोग **'धीरधिषणः, कवयः, वाग्मिनः, नृत्यगीतवादित्रेष्ववाह्याः, सर्वगुणोपेताः'** हुआ करते थे। यही कारण है कि बाण भी क्या वेद, क्या वेदांग, क्या पुराण, क्या धर्मशास्त्र, क्या दर्शन और क्या अर्थशास्त्र तथा क्या कलायें-सभी में अप्रतिहत-गति थे। साहित्य और मनोविज्ञान के तो वे आचार्य ही थे। किन्तु उनका शास्त्रीय ज्ञान कोरा शास्त्रीय ज्ञान ही नहीं रहता था, उसके पीछे उनके स्वभाव में नये-नये व्वहारिक ज्ञान की अतृप्त पिपासा भी हरदम बनी रहती थी। जो उन्हें वर्षों घर से बाहर चक्कर कटवाती रही। वे देशान्तरावलोकन कौतुकाक्षिप्त हृदय थे, उनके हृदय में नयी-नयी वस्तुओं को देखने का कौतुक बराबर बना रहता था। जब दौवारिक उन्हें सम्राट् के पास ले जा रहा था तो क्या बात थी साधारण व्यक्ति की तरह सीधे सम्राट् के पास चले जाते, लेकिन नहीं। मार्ग में वाजिशाला आ रही थी और फिर गजराज दर्पशात आ रहा था। उन्हें देखने का कौतुहल कवि-हृदय कैसे संवरण करता? दौवारिक को मना कर और मार्ग में यह सब देखकर ही विलम्ब से राजा को मिलने गए। यह थी उनकी व्यावहारिक अथवा प्रत्यक्षात्मक ज्ञान की पिपासा।

बाण कल्पना और लेखनी के धनी थे। कल्पना उड़ाने भरती तो वाणी लेखनी की नोक पर विलास के साथ थिरकने लग जाती। और फिर ऐसा नृत्य दिखाती कि बस देखते ही बनता है। उनके अद्भुत वाणी-विलास को देखकर ही गुणकला-पारखी हर्षवर्धन ने उन्हें वश्यवाणी-कविचक्रवर्ती की उपाधियों से भूषित किया। ऐसे कवीश्वर सम्मान के पात्र हुआ ही करते हैं। आर्यासप्तशतीकार आचार्य गोवर्धन ने बाण की वाणी के सम्बन्ध में यह ठीक ही कहा है-

जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथाऽवगच्छामि।

प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति।।

उपर्युक्त विवेचन से प्रतीत होता है कि संस्कृत साहित्य में जो स्थान महाकवि कालीदास को गद्य के क्षेत्र में प्राप्त है , वही स्थान कवि वाणभट्ट को भी पद्य के क्षेत्र में।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. हर्षचरित भूमिका , पृ॰- 10
2. वही
3. वही, पृ॰-11
4. वही
5. वही
6. वही, पृ॰-12